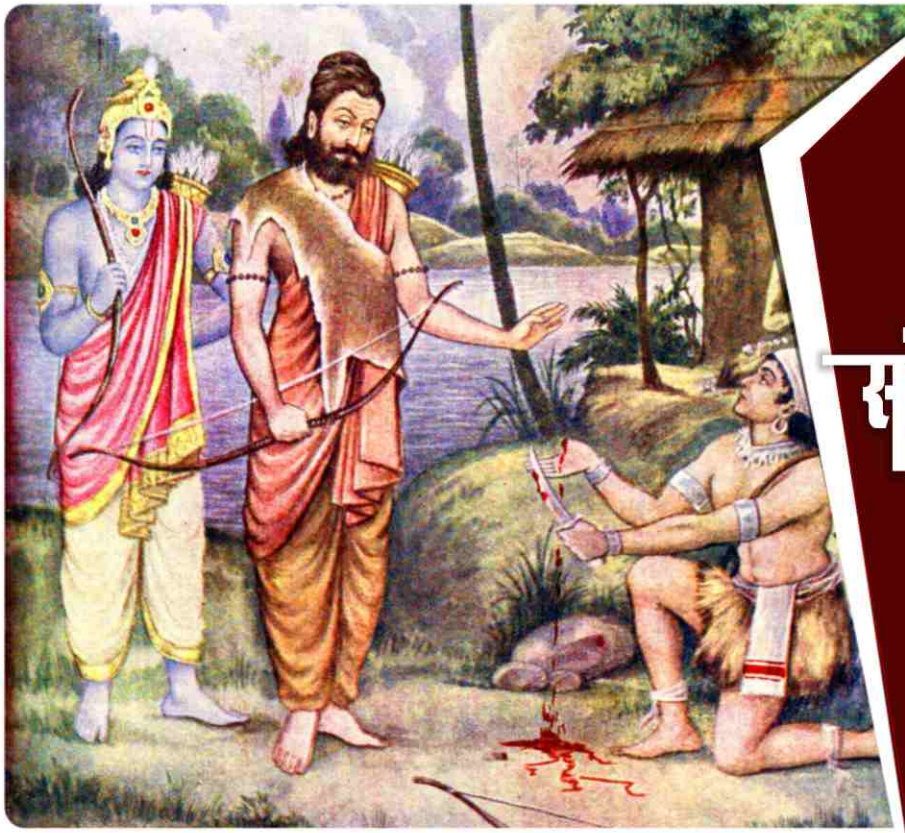

क्या है संस्कार-मान्यताओं का रहस्य?

संस्कारों का भारतीय धर्म संस्कृति में अपना विशेष महत्व है। 'संस्कार' शब्द का मतलब है- 'स्पर्श द्वारा आकार', अर्थात् एक बीज को स्पर्श देकर उसे पूर्णता तक पहुँचाना ही संस्कार है। संस्कार का तात्पर्य है 'शुद्ध आकार' अर्थात् पूरे जीवन में अशुद्धता की स्थिति न बने, उच्च विचार, उच्च ज्ञान के साथ वह अपनी यात्रा प्रारम्भ करे। 'संस्कार' शब्द से ही ''संस्कृति'' शब्द बना है।

भगवान मनु ने ब्राह्मणत्व को संस्कारों की उपलब्धि बताया है। वे कहते हैं ''जन्म से सभी शूद्र उत्पन्न होते हैं। संस्कार प्रक्रिया के आधार पर उनका दूसरा देव जन्म होता है।'' आगे चलकर उन्होंने ब्राह्मणत्व प्राप्त होने के सन्दर्भ में लिखा है- यज्ञों और महायज्ञों में अनुप्राणित करने पर यह सामान्य शरीर ही ब्राह्मण बन जाता है'' इसी प्रकार के अनेकों कथोपकथन अन्यान्य धर्मशास्त्रों में भरे पड़े हैं। उनका अभिप्राय यह है कि सुसंस्कारिता मात्र शिक्षण, सत्संग उपचार के अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से बनी हुई निर्धारित विधि-व्यवस्था के द्वारा भी विकसित किया जा सकता है।

शुद्ध संस्कारों द्वारा ही बल, बुद्धि, ज्ञान विवेक, ओज का विकास पूर्ण रूप से संभव है। संस्कारित व्यक्ति जीवन में निराश, हताश नहीं हो सकता। वह कुबुद्धि युक्त नहीं हो सकता, वह मदांध नहीं हो सकता। संस्कार देने का कर्त्तव्य सबसे पहले माता-पिता पर आता है, क्योंकि वे अपने से भी योग्य रचना का निर्माण कर रहे होते हैं। पर इतना निश्चित है, कि जिस प्रकार माता-पिता ने बालक में संस्कारों की रचना की, उसी प्रकार गुरु भी इन संस्कारों द्वारा शिष्य को अनेक प्रकार से उसका मार्जन कर उसके गुणों में अभिवृद्धि कर उसे पूर्ण संस्कारित करते हैं।

इस लेख में हिन्दू धर्म की मान्यताओं एवं संस्कारों से संबंधित शंकाओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निवारण किया गया है। मेरी अभिलाषा है कि भारतीय जनता अपने धर्म एवं संस्कारों के महत्त्व, रहस्य को समझे और उसे अपने जीवन में आत्मसात् कर अपना लोक-परलोक सुधारें।

श्री 108 क्यों?

प्रधान धर्माचार्यों और जगद्गुरुओं को श्री १०८ लिखने की प्रचलित परिपाटी का हेतु भी स्पष्ट है। हमारे इस ब्रह्मांड में समस्त ग्रह पिंडो से ऊपर नक्षत्र कक्षा कही जाती है। नक्षत्र से ऊपर अन्य कोई पिंड नहीं-सो हम जिस व्यक्ति को सर्वोच्च-पद प्रदान करना चाहें उसे नक्षत्र कक्षा से ही उपमित कर सकते हैं। यह पदवी प्रायः परिब्राजक अर्थात्-निरन्तर सर्वत्र घूम-घूम कर धर्म प्रचार करने वाले महात्माओं के साथ ही प्रयुक्त की जाती है। अतः यहां भी नक्षत्र संख्या और दिग् संख्या को गुणित करके २७*४*१०८ लिखा जाता है। आजकल जो श्री एक हजार एक सौ आठ और अनन्तश्री लिखने का प्रचार हो चला है यह जहां सौ से अधिक सहस्त्र और सहस्त्र से अधिक लक्ष इस प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ते हुए 'अनवस्था' दोष से ग्रस्त होने के कारण अन्त में निरर्थक सिद्ध होता है वहां 'होली' से बड़ा 'होला' तो 'दीवाली' से बड़ा 'दीवाला' का भी प्रत्यक्ष निदर्शन है।

सर्वप्रथम गणेश का ही पूजन क्यों?

हिन्दू धर्म में किसी भी शुभ कार्य का आरंभ करने के पूर्व गणेशजी की पूजा करना आवश्यक माना गया है, क्योंकि उन्हें विघ्नहर्ता व ऋद्धि-सिद्धि का स्वामी कहा जाता है। इनके स्मरण, ध्यान, जप, आराधना से कामनाओं की पूर्ति होती है व विघ्नों का विनाश होता है। वे शीघ्र प्रसन्न होने वाले बुद्धि के अधिष्ठाता और साक्षात् प्रणव रुप हैं। प्रत्येक शुभ कार्य के पूर्व श्रीगणेशाय नमः का उच्चारण कर उनकी स्तुति में यह मंत्र बोला जाता है-

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु में देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

गणेश विद्या के देवता हैं। साधना में उच्चस्तरीय दूरदर्शिता आ जाए, उचित-अनुचित, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की पहचान हो जाए, इसीलिए सभी शुभ कार्यों में गणेश पूजन का विधान बनाया गया है।

गणेशजी की ही पूजा सबसे पहले क्यों होती है, इसकी पौराणिक कथा इस प्रकार है-

पद्मपुराण के अनुसार-सृष्टि के आरंभ में जब यह प्रश्न उठा कि प्रथम

पूज्य किसे माना जाए, तो समस्त देवतागण ब्रह्माजी के पास पहुंचे। ब्रह्माजी ने कहा कि जो कोई संपूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहले कर लेगा, उसे ही प्रथम पूजा जाएगा। इस पर सभी देवतागण अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर परिक्रमा हेतु चल पड़े। चूंकि गणेशजी का वाहन चूहा है और उनका शरीर स्थूल, तो ऐसे में वे परिक्रमा कैसे कर पाते? इस समस्या को सुलझाया देवर्षि नारद ने। नारद ने उन्हें जो उपाय सुझाया, उसके अनुसार गणेशजी ने भूमि पर 'राम' नाम लिखकर उसकी सात परिक्रमा की और ब्रह्माजी के पास सबसे पहले पहुंच गए। तब ब्रह्माजी ने उन्हें प्रथम पूज्य बताया। क्योंकि 'राम' नाम साक्षात् श्रीराम का स्वरुप है और श्रीराम में ही संपूर्ण ब्रह्मांड निहित है।

शिवपुराण की एक अन्य कथा के अनुसार एक बार समस्त देवता भगवान् शंकर के पास समस्या लेकर पहुंचे कि किस देव को उनका मुखिया चुना जाए। भगवान् शिव ने यह प्रस्ताव रखा कि जो भी पहले पृथ्वी की तीन बार परिक्रमा करके कैलास पर्वत लौटेगा, वही अग्रपूजा के योग्य होगा और उसे ही देवताओं का स्वामी बनाया जाएगा। चूंकि गणेशजी का वाहन चूहा अत्यंत धीमी गति से चलने वाला था, इसलिए अपनी बुद्धि-चातुर्य के कारण उन्होंने अपने पिता शिव और माता पार्वती की ही तीन परिक्रमा पूर्ण की और हाथ जोड़कर खड़े हो गए। शिव ने प्रसन्न होकर कहा कि तुमसे बढ़कर संसार में अन्य कोई इतना चतुर नहीं है। माता-पिता की तीन परिक्रमा से तीनों लोकों की परिक्रमा का पुण्य तुम्हें मिल गया, जो पृथ्वी की परिक्रमा से भी बड़ा है। इसलिए जो मनुष्य किसी कार्य के शुभारंभ से पहले तुम्हारा पूजन करेगा, उसे कोई बाधा नहीं आएगी, बस, तभी से गणेशजी अग्रपूज्य हो गए।

वाराह पुराण की कथा के अनुसार जब देवगणों की प्रार्थना सुनकर महादेव ने उमा की ओर निर्निमेष नेत्रों से देखा उसी समय रुद्र के मुख रुपी आकाश से एक परम सुंदर तेजस्वी कुमार वहां प्रकट हो गया। उसमें ब्रह्मा के सब गुण विद्यमान थे और वह दूसरा रुद्र जैसा ही लगता था। उसके रुप को देखकर पार्वती को क्रोध आ गया और उन्होंने शाप दिया कि हे कुमार! तू हाथी के सिर वाला, लंबे पेट वाला और सांपों के जनेऊ वाला हो जाएगा। इस पर शंकरजी ने क्रोधित होकर जो अपने शरीर को धुना तो उनके रोमों से हाथी के सिर वाले, नीले अंजन के से रंग वाले, अनेक शस्त्रों को धारण किए हुए, इतने विनायक उत्पन्न हुए कि पृथ्वी क्षुब्ध हो उठी, देवगण भी घबरा गए। तब ब्रह्मा ने महादेव से प्रार्थना की, "हे त्रिशूलधारी! आपके सब विनायक उसके वश में रहें जो आपके मुख से पैदा हुए हैं। आप प्रसन्न होकर इन सबको ऐसा ही वर दें। तब महादेव ने अपने उस पुत्र से कहा कि तुम्हारे भव पुत्र गजास्व, गणेश और विनायक नाम के होंगे। यह सब क्रूर दृष्टि प्रचण्ड विनायक तुम्हारे भृत्य होंगे। यज्ञादि कार्यों में तुम्हारी सबसे पहले पूजा होगी, अन्यथा तुम कार्य के सिद्ध होने में विघ्न उपस्थित कर दोगे।" इसके अनन्तर देवगण ने गणेश की स्तुति की और शंकर ने उनका अभिषेक किया।

एक बार देवताओं ने गोमती के तट पर यज्ञ प्रारंभ किया तो उसमें अनेक विघ्न पड़ने लगे। यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सका। उदास होकर देवताओं ने ब्रह्मा और विष्णु से इसका कारण पूछा। दयामय चतुरानन ने पता लगाकर बताया कि इस यज्ञ में गणेशजी विघ्न उपस्थित कर रहे हैं। यदि आप लोग विनायक को प्रसन्न कर लें, तब यज्ञ पूर्ण हो जाएगा। विधाता की सलाह से देवताओं ने स्नान कर श्रद्धा, भक्ति पूर्वक गणेशजी का पूजन किया। विघ्नराज गणेश की कृपा से यज्ञ निर्विघ्न संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि महादेव ने भी त्रिपुर वध के समय पहले गणेशजी का पूजन किया था।

गणेश को दूर्वा और मोदक चढ़ाने का महत्त्व क्यों?

भगवान गणेश को ३ या ५ गांठ वाली दूर्वा (एक प्रकार की घास) अर्पण करने से वह शीघ्र प्रसन्न होते हैं और भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान करते हैं। इसीलिए उन्हें दूर्वा चढ़ाने का शास्त्रों में महत्त्व बताया गया है। इसके संबंध में पुराण में एक कथा का उल्लेख मिलता है-"एक समय पृथ्वी पर अनलासुर नामक राक्षस ने भंयकर उत्पात मचा रखा था। उसका अत्याचार पृथ्वी के साथ-साथ स्वर्ग और पाताल तक फैलने लगा था। वह भगवद्-भक्ति व ईश्वर आराधना करने वाले ऋषि-मुनियों और निर्दोष लोगों को जिंदा निगल जाता था। देवराज इंद्र ने उससे कई बार युद्ध किया, लेकिन उन्हें हमेशा परास्त होना पड़ा। अनलासुर से त्रस्त होकर समस्त देवता भगवान शिव के पास गए। उन्होंने बताया कि उसे सिर्फ गणेश ही खत्म कर सकते हैं, क्योंकि उनका पेट बड़ा है इसलिए वे उसको पूरा निगल लेंगे। इस पर देवताओं ने गणेश की स्तुति कर उन्हें प्रसन्न किया। गणेशजी ने अनलासुर का पीछा किया और उसे निगल गए। इससे उनके पेट में काफी जलन होने लगी। अनेक उपाय किए गए, लेकिन ज्वाला शांत न हुई। जब कश्यप ऋषि को यह बात मालूम हुई, तो वे तुरंत कैलास पर्वत गए और २१ दूर्वा एकत्रित कर एक गांठ तैयार कर गणेश को खिलाई, जिससे उनके पेट की ज्वाला तुरंत शांत हो गई।

"कालसर्प यंत्र मुद्रिका"

समस्त कष्टों, दैहिक व मानसिक कष्टों के निवारणार्थ कालसर्प यंत्र का लॉकेट व मुद्रिका

कालसर्प योग एक भयानक पीड़ादायक योग है जो व्यक्ति के जीवन को अत्यन्त दुःखदायी बना देता है। उस व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव बना ही रहता है। चाहे वह व्यक्ति पूर्ण प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु हो अथवा विश्व में बेहद चर्चित बिगबुल हर्षद मेहता।

इस योग ने सभी को कष्ट दिया है। जैसे कि विभिन्न प्रकार के दैहिक व मानसिक कष्ट भोगने पड़ते है। स्वास्थ्य प्रायः बिगड़ा रहता हैं। पैतृक संपति उसके जीवन में नष्ट हो जाती है या पैतृक संपति उसे नहीं मिलती। मिलती भी तो आधी-अधूरी। कार्य-व्यवसाय में भाई बन्धु धोखा देते है। भूमि-भवन का सुख नहीं मिल पाता। शिक्षा भरपूर लेकर भी उसका जीवन में उपयोग नहीं होता। संतान से कष्ट पाता है। कोर्ट-कचहरी, दावे-थानों के चक्कर लगाने पड़ते है। धन का नाश होता है। वह विपत्ति काल में सब के काम आता है परन्तु विपत्ति में उसके कोई काम नहीं आता। अगर आप भी वाकई कालसर्प योग के प्रभाव में हैं तो कालसर्प यंत्र अंगूठी अवश्य धारण करनी चाहिए।

कालसर्प यंत्र न्यौछावर-2100/-अंगूठी, लॉकेट-1500/-

सम्पर्क करें:- **विश्व तंत्र ज्योतिष**

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर-342001 (राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamalshrimali.com

आप सीधे ही 'विश्व तंत्र-ज्योतिष' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार हैं
STATE BANK OF INDIA A/C NO. 100-563-410-66
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

गणेशजी को मोदक यानी लड्डू काफी प्रिय हैं। इसके बिना गणेशजी की पूजा अधूरी ही मानी जाती है। गोस्वामी तुलसीदास ने विनय पत्रिका में कहा है-

गाइए गनपति जगबंदन। संकर सुवन भवानी नंदन।
सिद्धि-सदन गज बदन विनायक। कृपा-सिंधु सुंदर सब लायक।।
मोदकप्रिय मुद मंगलदाता। विद्या वारिधि बुद्धि विधाता।

इसमें भी उनकी मोदकप्रियता प्रदर्शित होती है। महाराष्ट्र के भक्त आमतौर पर गणेशजी को मोदक चढ़ाते हैं। उल्लेखनीय है कि मोदक मैदे के खोल में रवा, चीनी, मावे का मिश्रण कर बनाए जाते हैं। जबकि लड्डू मावे व मोतीचूर के बनाए हुए भी उन्हें पसंद हैं। जो भक्त पूर्ण श्रद्धाभाव से गणेशजी को मोदक या लड्डुओं का भोग लगाते हैं, उन पर वे शीघ्र प्रसन्न होकर इच्छापूर्ति करते हैं।

मोद यानी आनंद और 'क' का शाब्दिक अर्थ छोटा-सा भाग मानकर ही मोदक शब्द बना है, जिसका तात्पर्य हाथ में रखने मात्र से आनंद की अनुभूति होना है। ऐसे प्रसाद को जब गणेशजी को चढ़ाया जाए, तो सुख की अनुभूति होना स्वाभाविक है। एक दूसरी व्याख्या के अनुसार जैसे ज्ञान का प्रतीक मोदक मीठा होता है, वैसे ही ज्ञान का प्रसाद भी मीठा होता है।

गणपति अथर्वशीर्ष में लिखा है-

यो दूर्वांकरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति।
यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति स मेधावान् भवति।।
यो मोदक सहस्त्रेण यजति स वांछित फलमवाप्नोति।।

अर्थात् जो भगवान् को दूर्वा चढ़ाता है, वह कुबेर के समान हो जाता है। जो लाजो (धान-लाई) चढ़ाता है, वह यशस्वी हो जाता है, मेधावी हो जाता है और जो एक हजार लड्डुओं का भोग गणेश भगवान् को लगाता है, वह वांछित फल प्राप्त करता है।

गणेशजी को गुड़ भी प्रिय है। उनकी मोदकप्रियता के संबंध में एक कथा पद्मपुराण में आती हैं। एक बार गजानन और कार्तिकेय के दर्शन करके देवगण अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने माता पार्वती को एक दिव्य लड्डू प्रदान किया। इस लड्डू को दोनों बालक आग्रह कर मांगने लगे। तब माता पार्वती ने लड्डू के गुण बताए- "इस मोदक की गंध से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है। निस्संदेह इसे सूंघने या खाने वाला संपूर्ण शास्त्रों का मर्मज्ञ, सब तंत्रों में प्रवीण, लेखक, चित्रकार, विद्वान्, ज्ञान-विज्ञान विशारद और सर्वज्ञ हो जाता है।" फिर आगे कहा- "तुम दोनों में से जो धर्माचरण के द्वारा अपनी श्रेष्ठता पहले सिद्ध करेगा, वही इस दिव्य मोदक को पाने का अधिकारी होगा।"

माता पार्वती की आज्ञा पाकर कार्तिकेय अपने तीव्रगामी वाहन मयूर पर आरुढ़ होकर त्रिलोक की तीर्थयात्रा पर चल पड़े और मुहूर्त्त भर में ही सभी तीर्थों के दर्शन, स्नान कर लिए। इधर गणेशजी ने अत्यंत श्रद्धा-भक्ति पूर्वक माता-पिता की परिक्रमा की और हाथ जोड़कर उनके सम्मुख खड़े हो गए और कहा कि तीर्थ स्थान, देव स्थान के दर्शन, अनुष्ठान व सभी प्रकार के व्रत करने से भी माता-पिता के पूजन के सोलहवें अंश के बराबर पुण्य प्राप्त नहीं होता है, अतः मोदक प्राप्त करने का अधिकारी मैं हूं। गणेशजी का तर्कपूर्ण जवाब सुनकर माता पार्वती ने प्रसन्न होकर गणेशजी को मोदक प्रदान कर दिया और कहा कि माता-पिता की भक्ति के कारण गणेश ही यज्ञादि सभी शुभ कार्यों में सर्वत्र अग्रपूज्य होंगे।

□□□

पितृ दोष शांति कवच

हर व्यक्ति यही चाहता है कि उनके पितर यानि उनके पूर्वज मृत्यु के बाद उत्तम लोक मे जायें, इसका कारण यह भी है कि पितरों के खुश और सुखी रहने से परिवार में सुख–समृद्धि और उन्नति बनी रहती है, लेकिन आज के इस भाग–दौड़ भरी जिंदगी मे 'समय का अभाव' शब्द व्यक्ति विशेष का अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभा पाने का सबसे सरल समाधान बन गया है, साथ ही शास्त्रोक्त विधि का अपूर्ण ज्ञान भी आपकी विपत्तियों का कारण है, श्रद्धा से अपने पूर्वजों को याद करते हुए भी कहीं ना कहीं कुछ कमी रह ही जाती है और आप अपनी समस्यायों से मुक्त नहीं हो पाते तो एक विशेष समाधान लायें है हम अपने पाठको के लिये.... 'पितृ दोष शांति कवच', चाहें त्रुटि हुई हो या भूल, या समयाभाव की वजह से, अज्ञानता से उपजी गलती, यह कवच जिस प्रकार पूजा–उपासना से त्रुटि होने पर हम देवी देवताओ से क्षमा–प्रार्थना करते है, उसी प्रकार यह कवच रक्षा करता है, धारक की क्षमा–याचना के रूप में अपने पूर्वजों से व प्राप्ति करवाता है उनके आर्शीवाद की.....

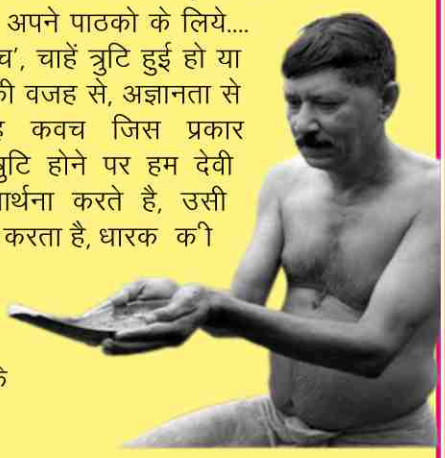

न्यौछावर राशि 3000/– रु.

सम्पर्क करें– त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र' प्लोट नं. 1, महावीर नगर, गौरव पथ,
नये नगर– निगम के पास, जोधपुर–342001 (राज.)
फोन एवं फैक्स (0291) 2621625, 2440011
2440111–999, 2615625, 2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in & gmail.com

धनदा यक्षिणी कवच

क्या ऐसा कोई माध्यम है जिससे तुरंत धन प्राप्ति हो सके, आकस्मिक धन प्राप्ति हो सके या उधारी वसूल की जा सके, या कहे शेयर मार्केट में पैसा कमा सकें, तो हाँ यह संभव है धनदा यक्षिणी की कृपा से क्यों कि इनकी कृपा से शीघ्र धन प्राप्ति होती है.....

न्यौछावर राशि 4000/– रु.